पाठ–17

सीधी-सी बात

–पाब्लो नेरुदा

पाठ की संरचना

17.1 आइए शुरू करें
17.2 उद्देश्य
17.3 मूल-पाठ
17.4 आइए समझें
17.5 भाषा-शैली

17.1 आइए शुरू करें

एक कवि या लेखक विश्व नागरिक होता है। उसका जन्म चाहे दुनिया के किसी भी कोने में हुआ हो, पर उसका साहित्य समूची दुनिया के लिए होती है। उसकी स्थिति बहुत कुछ सूरज और चंद्रमा की तरह होती है, जिनकी रोशनी बिना किसी भेद के सब तक एक बराबर पहुँचती है। हम दुनिया भर के महान लेखकों और कवियों के नाम याद करें, और उनके साहित्य को देखें तो कभी यह नहीं पाएँगे, कि उनका लिखा हुआ केवल उनके अपने देश और अपने समाज के लिए है, बल्कि वह सबके लिए एक समान प्रेरणादायी है। वाल्मीकि, होमर, कालिदास, कबीर, शेक्सपीयर, तुलसी आदि ऐसे ही कवि–रचनाकार हैं। इनकी रचना समूची मानव जाति की धरोहर है। चिली में जन्मे पाब्लो नेरूदा आधुनिक समय के ऐसे ही विलक्षण कवि हैं। वे स्पानी भाषा के कवि हैं और सही अर्थ में विश्व नागरिक होने का दर्जा रखते हैं।

हम अपनी प्रकृति और आस–पड़ोस से बहुत कुछ सीख सकते हैं। पर, हम अपनी छोटी–छोटी सफलताओं में इतने मग्न हो जाते हैं कि हमारे भीतर अहंकार प्रवेश कर जाता है। हम दंभी हो जाते हैं। हमें लगता है कि हमसे बड़ा कोई है ही नहीं। हम हमेशा अपनी प्रशंसा सुनना चाहते हैं, और अपनी बड़ाई खुद करने से भी पीछे नहीं हटते। ऐसे में पाब्लो नेरुदा की यह कविता 'सीधी–सी बात' हमारे सामने आइना

रख देती है, ताकि हम अपने को पहचान सकें। यह कविता कहती है कि इतनी बड़ी प्रकृति, जिसके सामने हमारा अस्तित्व कुछ भी नहीं, जब वह अपने बड़प्पन का कभी प्रचार नहीं करती, तो फिर हम ऐसा क्यों करते हैं?

17.2 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- इस कविता का संदेश बता सकेंगे।
- कवि के विचारों पर टिप्पणी कर सकेंगे।
- कवि का संक्षिप्त परिचय दे सकेंगे;
- अपने आस-पास की प्रकृति से मिलनेवाली सीख का उल्लेख कर सकेंगे।
- अनुवाद कार्य का महत्त्व बता सकेंगे ।
- प्रत्ययों की पहचान एवं उनसे शब्द निर्माण कर सकेंगे।

17.3 मूल पाठ

शक्ति होती है मौन (पेड़ कहते हैं मुझसे)
और गहराई भी (कहती हैं जड़ें)
और पवित्रता भी (कहता है अन्न)

पेड़ ने कभी नहीं कहा :
'मैं सबसे ऊँचा हूँ !'

जड़ ने कभी नहीं कहा :
'मैं बेहद गहराई से आई हूँ !'

और रोटी कभी नहीं बोली :
'दुनिया में क्या है मुझसे अच्छा !'